भगवान् सूर्य शांति अभिषेक स्तोत्र

गरुडजी ने पूछा– अरुण! जो आधि–व्याधि से पीड़ीत एवं रोगी, दुष्टग्रह तथा शत्रु आदि से उत्पीड़ीत और विनायक गृहीत हैं, उन्हें अपने कल्याणके लिये क्या करना चाहिये? आप इसे बतलाने की कृपा करें।

Gurudev Raj Verma
9897507933, 7500292413

अरुण जी बोले– विविध रोगोंसे पीड़ीत, शत्रुओं से संतप्त व्यक्तियोंके लिये भगवान् सूर्यकी आराधनाके अतिरिक्त अन्य कोई भी कल्याणकारी उपाय नहीं है, अतः ग्रहोंके घात और उपघातके नाशक, सभी रोगों एवं राज उपद्रवोंका शमन करने के लिये भगवान् सूर्य की उपासना करनी चाहिये।

गरुड़जी ने पूछा– द्विजश्रेष्ठ! ब्रह्मवादिनीके शापसे मैं पंखविहीन हो गया हूं, आप मेरे इन अंगोंको देखें। मेरे लिये अब कौन सा कार्य उपयुक्त है? जिससे मैं पुनः पंखयुक्त हो जाऊं।

अरुणजी बोले– हे गरुड! तुम शुद्ध चित्तसे अंधकारको दूर करने वाले जगन्नाथ भगवान् भास्कर की पूजा एवं हवन करो।

गरुड़जी ने पूछा– मैं विकलांग होनेसे भगवान् सूर्यकी पूजा एवं अग्निकार्य करनेमें असमर्थ हूं। इसलिये मेरी शांतिके लिये अग्निका कार्य आप सम्पादित करें।

अरुणजी बोले– विनतानन्दन! महाव्याधिसे प्रपीड़ीत होनेके कारण तुम इसके सम्पादनमें समर्थ नहीं हो, अतः मैं तुम्हारे रोगकी शांतिके लिये अग्निहोम करूंगा। यह लक्षहोम सभी पापों, विघ्नों तथा व्याधियोंका नाशक, महापुण्यजनक, शांति प्रदान करने वाला, अपमृत्यु विनाशक, महान् शुभकारी तथा विजय प्रदान करने वाला है। यह सभी देवोंको तृप्ति प्रदान करने वाला तथा भगवान् सूर्यको अत्यन्त प्रिय है। इस अग्निकर्ममें सूर्यमन्दिरके

अग्निकोणमें गोमयसे भूमिको लीपकर अग्नि की स्थापना करे और सर्वप्रथम दिक्पालोंकी आहुति प्रदान करे। विधिवत् आहुतियां प्रदान करने के बाद 'ओं भूर्भुवः स्वाहा' इसके द्वारा लक्ष होम का सम्पादन करे। हवनके बाद शांति के लिये निर्दिष्ट मन्त्रोंका पाठ करते हुए अभिषेक करना चाहिये। सर्वप्रथम ग्रहोंके अधिपति भगवान् सूर्य तथा सोमादि ग्रहोंसे शांति की प्रार्थना करे।

रक्त कमलके समान नेत्रोंवाले, हजार किरणों वाले, सात अश्वोंसे युक्त रथ पर आरुढ़, सिन्दूरके समान रक्त आभा वाले, सभी देवताओं द्वारा नमस्कृत भगवान् सूर्य ग्रहपीड़ा निवारण करने वाली महाशांति आपको (अथवा मुझे) प्रदान करें। शीतल किरणोंसे युक्त, अमृतात्मा, अत्रिके पुत्र चन्द्रदेव सौम्यभावसे मेरी ग्रहपीड़ा दूर करें। पद्मरागके समान वर्णवाले, मधुके समान पिंगलनेत्र वाले, अग्निसदृश अंगारक, भूमिपुत्र भौम मेरी ग्रहपीड़ा दूर करें। पुष्परागके समान आभायुक्त, पिंगलवर्ण वाले, पीतमाल्य तथा वस्त्र धारण करने वाले बुध मेरी पीड़ा दूर करें। तप्त स्वर्णके समान आभायुक्त, सर्वशास्त्रविशारद, देवताओं के गुरु बृहस्पति मेरी ग्रहपीड़ा दूर कर मुझे शांति प्रदान करें। हिम, कुन्दपुष्प तथा चन्द्रमाके समान स्वच्छ वर्णवाले, दैत्य तथा दानवोंसे पूजित, सूर्यार्चनमें तत्पर रहने वाले, महामति, नीतिशास्त्रमें पारंगत शुक्रचार्य मेरी ग्रहपीड़ा दूर करें। विविध रूपों को धारण करने वाले, अविज्ञातगतियुक्त, सूर्यपुत्र शनिश्चर, अनेक शिखरों वाले केतु एवं राहु मेरी

पीड़ा दूर करें। सर्वदा कल्याणकी दृष्टिसे देखने वाले तथा भगवान् सूर्यकी नित्य अर्चना करनेमें तत्पर ये सभी ग्रह प्रसन्न होकर मुझे शांति प्रदान करें।

तदनन्तर ब्रह्मा विष्णु तथा महेश– इन त्रिदेवोंसे इस प्रकार शांति प्रार्थना करें– पद्मासन पर आसीन, पद्मवर्ण, पद्मपत्रके समान नेत्रवाले, कमण्डलुधारी, देवगंधर्वोंसे पूजित, देवशिरोमणि, महातेजस्वी, सभी लोकोंके स्वामी, सूर्यार्चनमें तत्पर चतुर्मुख, दिव्य ब्रह्म शब्द से सुशोभित ब्रह्माजी मुझे शांति प्रदान करें। पीताम्बर धारण करने वाले, शंख, चक्र, गदा तथा पद्म धारण करने वाले चतुर्भुज, श्यामवर्ण वाले, यज्ञस्वरूप, आत्रेयीके पति और सूर्यके ध्यानमें तल्लीन श्रीहरि मुझे नित्य शांति प्रदान करें। चन्द्रमा एवं कुन्दपुष्पके समान उज्जवल वर्णवाले, सर्पादि विशिष्ट आभरणोंसे अलंकृत, महातेजस्वी, मस्तक पर अर्धचन्द्र धारण करने वाले, समस्त विश्वमें व्याप्त, श्मशानमें रहने वाले, दक्षयज्ञ विध्वंस करने वाले, वरणीय, आदित्यके देहसे सम्भूत, वरदानी, देवाधिदेव तथा भस्म धारण करने वाले महेश्वर मुझे शांति प्रदान करें।

तदनन्तर सभी मातृकाओंसे शांति के लिये प्रार्थना करे– पद्मरागके समान आभावाली, अक्षमाला एवं कमण्डलु धारण करने वाली, आदित्यकी आराधनामें तथा आशीर्वाद देनेमें तत्पर, सौम्यवदनवाली ब्रह्माणी प्रसन्न होकर मुझे शांति प्रदान करें। हिम, कुन्दपुष्प तथा चन्द्रमाके समान वर्णवाली,

महावृषभ पर आरुढ़, हाथमें त्रिशूल धारण करने वाली, आश्चर्यजनक आभरणोंसे विश्रुत, चतुर्भुजा चतुर्वक्त्रा तथा त्रिनेत्रधारिणी, पापों का नाश करने वाली, भगवान् शंकरकी अर्चनामें तत्पर, महाश्वेता नामसे विख्यात आदित्यदयिता रुद्राणी मुझे शांति प्रदान करें। सिन्दूरके समान अरुण विग्रहवाली, सभी अलंकारोंके विभूषित, हाथमें शक्ति धारण करने वाली, सूर्यकी अर्चनामें तत्पर, महान् पराक्रमशालिनी, वरदायिनी, मयूरवाहिनी देवी कौमारी मुझे शांति प्रदान करें। गदा एवं चक्रको धारण करने वाली, पीताम्बरधारिणी, सूर्यार्चनमें नित्य तत्पर रहने वाली, असुरमर्दिनी, देवताओं के द्वारा पूजित चतुर्भुजा देवी वैष्णवी मुझे नित्य शांति प्रदान करें। ऐरावत पर आरुढ़, हाथमें वज्र धारण करने वाली, महाबलशालिनी, सिद्ध गंधर्वोंसे सेवित, सभी अलंकारोंसे विभूषित, चित्र विचित्र अरुणवर्णवाली, सर्वत्रलोचना देवी इन्द्राणी मुझे शांति प्रदान करें। वराहके समान नासिकावाली, श्रेष्ठ वराह पर आरुढ, विकटा, शंख, चक्र तथा गदा धारण करने वाली, श्यामवदाता, तेजस्विनी, प्रतिक्षण भगवान् सूर्यकी आराधना करने वाली, वरदायिनी देवी वाराही मुझे शांति प्रदान करें। क्षाम कटि प्रदेशवाली, मांसरहित, कंकाल स्वरूपिणी, कराल वदना, भंयकर तलवार, घंटा, खटवांग और वरमुद्रा धारण करने वाली, क्रूर, लाल पीले नेत्रों वाली, गजचर्मधारिणी, गोश्रुताभरणा, प्रेतस्थानमें निवास करने वाली, देखनेमें

भयंकर परंतु शिवस्वरूपा, हाथमें चण्डमुण्डके कपाल धारण किये हुए तथा कपालकी माला पहने चन्द्ररूपिणी देवी चामुण्डा मुझे शांति प्रदान करें।

आकाशमातृकाएं, लोकमातृकांए तथा अन्य लोकमातृकाएं, भूतमातृकाएं, अन्य पितमातृकाएं, वृद्धि श्राद्धोंमें जिनकी पूजा होती है वे पितृमातृकाएं, माता, प्रमाता, वृद्धप्रमाता– ये मातृ–मातृकाएं, शांतचित्तसे मुझे शांति प्रदान करें। ये सभी मातृकाएं अपने हाथोंमें आयुध धारण करती हैं और संसारको व्याप्त करके प्रतिष्ठित रहती हैं तथा भगवान् सूर्यकी आराधनामें तत्पर रहती हैं। सुन्दर अंग प्रत्यंगवाली तथा सुन्दर कटि प्रदेशवाली, पीत एवं श्याम वर्णवाली, स्निग्ध आभावाली, तिलकसे सुशोभित ललाटवाली, अर्धचन्द्ररेखा धारण करने वाली, सभी आभरणोंसे विभूषित, चित्र विचित्र वस्त्र धारण करने वाली, सभी स्त्रीस्वरूपोंमें गुण और सम्पत्तियोंके कारण सर्वश्रेष्ठ शोभावाली, आदित्यकी आराधनामें तत्पर, केवल भावनामात्रसे संतुष्ट होने वाली वरदायिनी भगवती उमादेवी अपने अमित तेजस्वी एवं शांत रूपसे प्रत्यक्ष प्रकट होकर प्रसन्न हो मुझे शांति प्रदान करें।

खटवांग धारण किये हुए, शक्तिके युक्त, मयूरवाहन, कृत्तिका और भगवान् रुद्रसे उद्भूत, समस्त देवताओंसे अर्चित तथा आदित्यसे वरप्राप्त भगवान् कार्तिकेय अपने तेजसे मुझे बल, सौख्य एवं शांति प्रदान करें। हाथमें शूल एवं श्वेतवस्त्र धारण किये हुए, स्वर्ण आभायुक्त, भगवान् सूर्यकी आराधना

करने वाले, तीन नेत्रों वाले नन्दीश्वर मुझे धर्ममें उत्तम बुद्धि, आरोग्य एवं शांति प्रदान करें। चिकने अंजनके समान आभायुक्त, महादेर तथा महाकाय नित्य अचल आरोग्य प्रदान करें। नाना आभूषणोंसे विभूषित नागको यज्ञोपवीतके रूपमें धारण किये हुए, समस्त अर्थ सम्पत्तियोंके उद्धारक, एकदन्त, उत्कट स्वरूप, गजवक्त्र, महाबलशाली, गणोंके अध्यक्ष, वरप्रदाता, भगवान् सूर्यकी अर्चनामें तत्पर, शंकरपुत्र विनायक मुझे शांति प्रदान करें। इन्द्रनीलके समान आभावाले, त्रिनेत्रधारी, प्रदीप्त त्रिशूल धारण करने वाले, नागोंसे विभूषित, पापोंको दूर करने वाले तथा अलक्ष्य रूपवाले, मलोंके नाशक भगवान् शंकर प्रसन्नचितसे मुझे महाशांति प्रदान करें।

नाना अलंकारोंसे विभूषित, सुन्दर वस्त्रोंको धारण करने वाली, देवताओंकी जननी, सारे संसारसे नमस्कृत, समस्त सिद्धियोंकी प्रदायिनी, प्रसाद प्राप्तिकी एकमात्र स्थान जगन्माता भगवती पार्वती मुझे शांति प्रदान करें। स्निग्ध श्यामल वर्णवाली, धनुषचक्र, खड्ग तथा पट्टिश आयुधोंको धारणकी हुई, सभी उपद्रवोंका नाश करने वाली, विशाल बाहुओं वाली, महामहिषमर्दिनी भगवती भवानी दुर्गा मुझे शांति प्रदान करें। अत्यन्त सूक्ष्म, अतिक्रोधी, तीन नेत्रोंवाले, महावीर, सूर्यभक्त भृंगिरिटी मेरा नित्य कल्याण करें। विशाल घण्टा तथा रुद्राक्ष माला धारण किये हुए, ब्रह्महत्यादि उत्कट पापोंका नाश करने वाले, प्रचण्डगणोंके सेनापति, आदित्यकी आराधनामें तत्पर महायोगी चण्डेश्वर मुझे शांति एवं कल्याण प्रदान करें। दिव्य आकाश मातृकाएं, अन्य

देवमातृकाएं, देवताओं द्वारा पूजित मातृकाएं जो संसारको व्याप्त करके अवस्थित हैं और सूर्यार्चनमें तत्पर रहती हैं, वे मुझे शांति प्रदान करें। रौद्र कर्म करने वाले तथा रौद्र स्थानमें निवास करने वाले रुद्रगण, अन्य समस्त गणाधिप, दिशाओं तथा विदिशाओंमें जो विघ्नरूपसे अवस्थित रहते हैं, वे सभी प्रसन्नचित्त होकर मेरे द्वारा दिये गये नैवेद्य को ग्रहण करें। ये मुझे नित्य सिद्धि प्रदान करें और मेरी सभी भयोंसे रक्षा करें।

हाथोंमें वज्र लिये हुए, महाबलशाली, सफेद, नीले, काले तथा लाल वर्णवाले, पृथ्वी, आकाश, पाताल तथा अंतरिक्षमें रहने वाले ऐन्द्रगण निरन्तर मेरा कल्याण करें और शांति प्रदान करें। आग्नेय दिशामें रहने वाले निरन्तर ज्वलनशील, जपाकुसुमके समान लाल तथा लोहितवर्ण वाले, हाथमें निरन्तर दण्ड धारण करने वाले सूर्यके भक्त भास्कर आदि मेरे द्वारा दिये गये नैवेद्यको ग्रहण करें और मुझे नित्य शांति एवं कल्याण प्रदान करें। ईशानकोणमें अवस्थित शांति स्वभावयुक्त, त्रिशूलधारी, अंगोंमें भस्म धारण किये हुए, नीलकण्ठ, रक्तवर्णवाले, सूर्यपूजनमें तत्पर, अन्तरिक्ष, आकाश, पृथ्वी तथा स्वर्गमें निवास करने वाले रुद्रगण मुझे नित्य शांति एवं कल्याण प्रदान करें।

रत्नोंके प्राकारों एवं महारत्नोंसे शोभित, विद्याधर एवं सिद्ध गंधर्वोंसे सुसेवित पूर्वदिशामें अवस्थित अमरावती नामवाली नगरीमें महाबली, वज्रपाणि, देवताओंके अधिपति इन्द्र निवास करते हैं। वे ऐरावत पर आरुढ़ एवं स्वर्णकी

आभाके समान प्रकाशमान हैं, सूर्यकी आराधनामें तत्पर तथा नित्य प्रसन्न चित्त रहने वाले हैं, वे मुझे परम शांति प्रदान करें। विविध देवगणोंसे व्याप्त, भांति-भांतिके रत्नोंसे सुशोभित, अग्निकोणमें अवस्थित तेजस्वी नामकी पुरी है, उसमें स्थित जलते हुए अंगारोंके समान प्रकाशवाले, ज्वालमालाओंसे व्याप्त, निरन्तर ज्वलन एवं दहनशील, पापनाशक, आदित्यकी आराधनामें तत्पर अग्निदेव मेरे पापोंका सर्वथा नाश करें एवं शांति प्रदान करें। दक्षिण दिशामें संयमनीपुरी स्थित है, वह नाना रत्नोंसे सुशोभित एवं सैकड़ों सुर-असुरोंसे व्याप्त है, उसमें रहने वाले हरित पिंगल नेत्रोंवाले महामहिषपर आरुढ, कृष्ण वस्त्र एवं मालासे विभूषित, सूर्यकी आराधनामें तत्पर महातेजस्वी यमराज मुझे क्षेम एवं आरोग्य प्रदान करें। नैर्ऋत्यकोणमें स्थित कृष्णा नामकी पुरी है, जो महान् रक्षोगण, प्रेत तथा पिशाच आदि से व्याप्त है, उसमें रहने वाले रक्तमाला और वस्त्रोंसे सुशोभित हाथमें तलवार लिये, करालवदन, सूर्यकी आराधनामें तत्पर राक्षसोंके अधिपति निर्ऋतिदेव शांति एवं धन-धान्य प्रदान करें। पश्चिम दिशामें शुद्धवती नामकी नगरी है, वह अनेक किन्नरोंसे सेवित तथा भोगिगणोंसे व्याप्त है। वहां स्थित हरित तथा पिंगल वर्णके नेत्रवाले वरुणदेव प्रसन्न होकर मुझे शांति प्रदान करें।

ईशानकोणमें स्थित यशोवती नामककी अनुपम पुरीमें रहने वाले त्रिनेत्रधारी शांतात्मा रुद्राक्ष मालाधारी परमदेव भगवान् शंकर मुझे नित्य शांति प्रदान करें। भूः, भुवर्, महर् एवं जन आदि लोकोंमें रहने वाले प्रसन्नचित्त देवता

मुझे नित्य शांति प्रदान करें। सूर्यभक्ता सरस्वती मुझे शांति प्रदान करें। हाथमें कमल धारण करने वाली तथा सुन्दर स्वर्ण सिंहासन पर अवस्थित, सूर्यकी आराधनामें तत्पर भगवती महालक्ष्मी मुझे ऐश्वर्य प्रदान करें और आदित्य की आराधनामें तल्लीन, विचित्र वर्णके सुन्दर हार एवं कनकमेखला धारण करने वाली सूर्यभक्ता भगवती अपराजिता मुझे विजय प्रदान करें।

परमश्रेष्ठ कृत्तिका, वरानना रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य तथा आश्लेषा– ये सभी नक्षत्र मातृकाएं सूर्याचनमें रत हैं और प्रभामालासे विभूषित हैं। मघा, पूर्वा तथा उत्तरफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा– ये दक्षिण दिशाका आश्रय ग्रहण कर भगवान् सूर्यकी पूजा करती रहती हैं। आकाशमें उदित होने वाली ये नक्षत्र मातृकाएं मुझे शांति प्रदान करें। पश्चिम दिशामें रहने वाली अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढा तथा उत्तरषाढा, अभिजित् एवं श्रवण– ये नक्षत्र मातृकाएं निरन्तर भगवान् भास्करकी पूजा करती रहती हैं, ये मुझे वर्धनशील ऐश्वर्य एवं शांति प्रदान करें। उत्तर दिशामें अवस्थित धनिष्ठा, शतभिष, पूर्व तथा उत्तरभाद्रपद, रेवती, अश्विनी एवं भरणी नामकी नक्षत्र मातृकाएं नित्य सूर्यकी पूजा करती रहती हैं, ये मुझे नित्य वर्धनशील ऐश्वर्य एवं शांति प्रदान करें।

पूर्व दिशामें अवस्थित तथा भगवान् सूर्यके चरणकमलोंमें भक्तिपूर्वक आराधना करने वाली मेष, सिंह और धनु राशियां मुझे नित्य शांति प्रदान

करें। दक्षिण दिशामें स्थित रहने वाली, भगवान् सूर्यकी अर्चना करने वाली वृष, कन्या तथा मकर राशियां परमा भक्तिके साथ मुझे शांति प्रदान करें। पश्चिम दिशामें स्थित एवं निरन्तर ग्रहनायक भगवान् आदित्यकी आराधना करने वाली मिथुन, तुला तथा कुम्भ राशियां मुझे नित्य शांति प्रदान करें। कर्क, वृश्चिक तथा मीन राशियां जो उत्तर दिशामें स्थित रहती हैं तथा भगवान् सूर्यकी भक्ति करती हैं, मुझे शांति प्रदान करें।

भगवान् सूर्यके अनुग्रहसे सम्पन्न ध्रुवमण्डलमें रहने वाले सप्तर्षिगण मुझे शांति प्रदान करें। कश्यप, गाल्व, गार्ग्य, विश्वामित्र, दक्ष, वसिष्ठ, मार्कण्डेय, क्रतु, नारद, भृगु, आत्रेय, भारद्वाज, वाल्मीकि, कौशिक, वात्स्य, शाकल्य, पुनर्वसु तथा शालंकायन– ये सभी सूर्य ध्यानमें तत्पर रहने वाले महातपस्वी ऋषिगण मुझे शांति प्रदान करें। सूर्य की आराधनामें तत्पर ऋषि तथा मुनिकन्याएं, जो निरन्तर आशीर्वाद प्रदान करनेमें तत्पर रहती हैं, मुझे नित्य सिद्धि प्रदान करें।

भगवान् सूर्यकी पूजामें तत्पर दैत्यराजेन्द्र नमुचि, महाबली शंकुकर्ण, पराक्रमी महानाथ– ये सभी मेरे लिये बल, वीर्य एवं आरोग्यकी प्राप्तिके लिये निरन्तर कामना करें। महान् सम्पत्तिशाली हयग्रीव, अत्यन्त प्रभाशाली प्रह्लाद्, अग्निमुख, कालनेमि– ये सभी सूर्यकी आराधना करने वाले दैत्य मुझे पुष्टि, बल और आरोग्य प्रदान करें। वैरोचन, हिरण्याक्ष, तुर्वसु, सुलोचन, मुचुकन्द,

मुकुन्द तथा रैवतक– ये सभी सूर्यभक्त मुझे पुष्टि प्रदान करें। दैत्यपत्नियां, दैत्यकन्याएं तथा दैत्यकुमार– ये सभी मेरी शांतिके लिये कामना करें।

नागराजेन्द्र, अनन्त, अत्यन्त पीले शरीरवाले, विस्फुरित फणवाले, स्वस्तिक चिह्नसे युक्त तथा अत्यन्त तेजसे उद्दीप्त नागराज तक्षक, अत्यन्त कृष्णवाले, कण्ठमें तीन रेखाओंसे युक्त, भयंकर आयुधरूपी दंष्ट्रसे समन्वित तथा विषके दर्पसे बलान्वित महानाग कर्कोटक, पद्मके समान कान्तिवाले, कमलके पुष्पके समान नेत्रवाले, पद्मवर्णके महानाग पद्म, श्यामवर्णवाले, सुन्दर कमलके समान नेत्रवाले, विषरूपी दर्पसे उन्मत्त तथा ग्रीवामें तीन रेखा वाले शोभासम्पन्न महानाग शंखपाल, अत्यन्त गौर शरीर वाले, चन्द्रार्धकृत शेखर, सुन्दर फणोंसे युक्त नागेन्द्र कुलिक और नागराज वासुकि सूर्यकी आराधना करने वाले– ये सभी अष्टनाग महाविषको नष्ट करके मुझे निरन्तर अचल महाशांति प्रदान करें। अंतरिक्ष, स्वर्ग, गिरिकन्दराओं, दुर्गों तथा भूमि एवं पातालमें रहने वाले, भगवान् सूर्यके अर्चनमें आसक्त समस्त नागगण और नागपत्नियां, नागकन्याएं तथा नागकुमार सभी प्रसन्नचित्त होकर मुझे सदा शांति प्रदान करें। जो इस नाग शांति का श्रवण या कीर्तन करता है, उसे सर्पगण कभी नहीं काटते और विष का प्रभाव भी उन पर नहीं पड़ता।

ग्रहाधिपति भगवान् सूर्यकी नित्य आराधना करने वाली पुण्यतोया गंगा, महादेवी यमुना, नर्मदा, गौतमी, कावेरी, वरुणा, देविका, निरंजना तथा

मंदाकिनी आदि नदियां और महानद शोण, पृथ्वी, स्वर्ग एवं अंतरिक्षमें रहने वाली नदियां मुझे नित्य शांति प्रदान करें। यक्षराज कुबेर, महायश मणिभद्र, यक्षेन्द्र सुचिर, पांचिक, महातेजस्वी धृतराष्ट्र, यक्षेन्द्र विरूपाक्ष, कंजाक्ष तथा अंतरिक्ष एवं स्वर्गमें रहने वाले समस्त यक्षगण, यक्षपत्नियां, यक्षकुमार तथा यक्षकन्याएं जो सभी सूर्यकी आराधनामें तत्पर रहते हैं, ये मुझे नित्य शांति प्रदान करें। नित्य कल्याण, बल, सिद्धि भी शीघ्र प्रदान करें एवं मंगलमय बनायें।

भगवान् सूर्यकी आराधना करने वाले सभी पर्वत, ऋद्धि प्रदान करने वाले वृक्ष, सभी सागर तथा पवित्रारण्य मुझे शांति प्रदान करें। पृथ्वी, अंतरिक्ष, स्वर्ग तथा पातालमें निवास करने वाले एवं भगवान् सूर्यकी आराधना करने वाले महाबलशाली और कामरूप सभी राक्षस, प्रेत, पिशाच एवं सभी दिशाओंमें अवस्थित अपस्मारग्रह तथा ज्वरग्रह आदि मुझे नित्य शांति प्रदान करें।

जिन भगवान् सूर्यके दक्षिण भागमें विष्णु, वाम भागमें शंकर और ललाटमें ब्रह्मा सदा स्थित रहते हैं, ये सभी देवता उन भगवान् सूर्यके तेजसे सम्पन्न होकर मुझे शांति प्रदान करें तथा सौधर्मको जानने वाले समस्त देवगण संसारके सूर्यभक्तों एवं सभी प्राणियोंको सर्वदा शांति प्रदान करें।

अंधकार दूर करने वाले तथा जय प्रदान करने वाले विवस्वान् भगवान् भास्कर की सदा जय हो। ग्रहोंमें उत्तम तथा कल्याण करने वाले, कमलको विकसित करने वाले भगवान् सूर्यकी जय हो, ज्ञानस्वरूप भगवान् सूर्य! आपको नमस्कार है। शांति एवं दीप्तिका विधान करने वाले, तमोहन्ता भगवान् अजित! आपको नमस्कार है, आपकी जय हो। हजार किरण उज्ज्वल, दीप्तिस्वरूप, संसारके निर्माता आपको बार-बार नमस्कार है, आपकी जय हो। गायत्रीस्वरूप वाले, पृथ्वीको धारण करने वाले सावित्री प्रिय मार्तण्ड भगवान् सूर्यदेव! आपको बार-बार नमस्कार है, आपकी जय हो।

इस विधानसे अरुणके द्वारा गरुडके कल्याणके लिये शांति विधान करते ही वे सुन्दर पंखोंसे समन्वित हो गये। वे तेजमें बुधके समान और बलमें विष्णुके समान हो गये। इसी प्रकार अन्य रोगग्रस्त मानवगण इस सौरशांति से नीरोग हो जाते हैं। इसलिये इस शांति विधान को प्रयत्नपूर्वक करना चाहिये। ग्रहोपघात, दुर्भिक्ष, सभी उत्पातोंमें तथा अनावृष्टि आदिमें लक्ष होम समन्वित सौरसूक्तसे यत्नपूर्वक पूजन कर एवं वारुण सूक्तसे प्रसन्नचित्त हो शुद्ध घी, मधु, तिल, यव एवं मधुके साथ पायस से हवन एवं शांति करे। ऐसा करने से देवतागण मनुष्योंके लिये कल्याणकी कामना करते हैं एवं उनके लिये लक्ष्मीकी वृष्टि करते हैं।

जो मनुष्य भगवान् दिवाकर का ध्यान कर इस शांति अध्याय को पढ़ता या सुनता है, वह रणमें शत्रुपर विजयी हो परम सम्मानको प्राप्त कर एकच्छत्र शासक होकर सदा आनन्दमय जीवन व्यतीत करता है। वह पुत्र पौत्रोंसे प्रतिष्ठित होकर आदित्यके समान तेजस्वी एवं प्रभासमन्वित व्याधिशून्य जीवन यापन करता है। जिसके कल्याणके उद्देश्यसे इस शांतिकल्पका पाठ किया जाता है, वह वात पित्त, कफजन्य रोगोंसे पीड़ीत नहीं होता एवं उसकी न तो सर्पके दंशसे मृत्यु होती है और न अकालमें मृत्यु होती है। उसके शरीरमें विषका प्रभाव भी नहीं होता एवं जड़ता, अंधत्व, मूकता भी नहीं होती। उत्पत्ति भय नहीं रहता और न किसीके द्वारा किया गया अभिचारकर्म सफल होता है। रोग, महान् उत्पात, महाविषैले सर्पादि सभी इसके श्रवणसे शांत हो जाते हैं। सभी गंगादि तीर्थोंका जो विशेष फल है, उसका कई गुना फल इस शांतिकाध्यायके श्रवणसे प्राप्त होता है और दस राजसूय एवं अन्य यज्ञोंका फल भी उसे मिलता है। इसे सुनने वाला सौ वर्ष तक व्याधिरहित नीरोग होकर जीवनयापन करता है। गोहत्यारा, कृतघ्न, ब्रह्मघाती, गुरुतल्पगामी और शरणागत, दीन, आर्त, मित्र तथा विश्वासी व्यक्तिके साथ घात करने वाला, दुष्ट, पापाचारी, पितृघातक एवं मातृघातक सभी इसके श्रवणसे निःसन्देह पापमुक्त हो जाते हैं। इस शांति अध्याय का पाठ करते हुए कामना अनुसार सूर्यप्रतिमा का अभिषेक करने से उत्तम फल मिलता है।

Gurudev Raj Verma

Mob- +91-9897507933 +91-7500292413

Website- mahakalshakti.wordpress.com

Website- www.scribd.com/mahakalshakti

Email- mahakalshakti@gmail.com